IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में घाट का महत्व"

डॉ. यशवंत कुमार साव
सहायक प्राध्यापक(हिन्दी)
शासकीय महाविद्यालय अरमरीकला, जिला-बलोद (छ.ग.)

सारांश- छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में नदी या तालाब पर बने घाट का विशेष महत्व है। यहाँ प्रायः सभी ग्रामों में जहाँ से नदी प्रवाहित नहीं होती तालाब अवश्य होता है। तालाब के बिना यहाँ के लोकजीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गाँव में बने तालाब के घाट पर ग्रामीण बिना किसी जातिगत, अर्थगत भेदभाव के आपस में मिलते हैं, स्नान करते हैं एवं अन्य सामाजिक, धार्मिक परंपरा का निर्वाह करते हैं। लोकजीवन के पारंपरिक लोक पर्व जँवारा, भोजली, गौरा-गौरी का विसर्जन हो, या देवी प्रतिमा, गणपति प्रतिमा का विसर्जन हो, तालाब पर बने घाट में लोगों की गरिमामयी उपस्थिति में किया जाता है। तालाब घाट में विसर्जन के अवसर पर सभी ग्रामीण एकत्रित होकर सामाजिक सद्भावना का संदेश देते हैं। जिस प्रकार पवित्र गंगा नदी सभी लोगों को बिना किसी भेदभाव के पवित्र करती है, वैसा ही अनुभव लोक परंपरा में विभिन्न अवसरों पर तालाब में स्नान करने के उपरांत यहाँ के लोग करते हैं। लोकजीवन में मृत्यु संस्कार के लिए तालाब आवश्यक है साथ ही कुछ जातियों द्वारा अपने इष्ट देवता से संबंधित कार्य भी तालाब पर ही सम्पन्न होते हैं। तालाब का धार्मिक, सामाजिक महत्व के साथ ही पर्यावरणीय महत्व भी है। तालाब वर्षा जल संचय का उत्तम साधन है। तालाब के माध्यम से संचित वर्षा जल का उपयोग ग्रामीण वर्षभर विभिन्न कार्यों में करते हैं। तालाब के जल से भूजल स्तर में भी सुधार होता है। तालाब के किनारे वृक्ष लगाने की भी परंपरा है। प्रायः सभी तालाबों के किनारे पर बरगद, पीपल, आम के वृक्ष देखने को मिलते हैं। वृक्ष पर्यावरण के लिए और मानव जीवन के लिए कितना उपयोगी है इससे सभी परिचित हैं। इस प्रकार लोकजीवन में तालाब और उसके घाट का विशेष धार्मिक, सामाजिक और पर्यावरणीय महत्व है।

KEYWORDS- छत्तीसगढ़, लोकजीवन, तालाब, घाट, लोकपरंपरा, लोकपर्व

प्रस्तावना- भारत में प्राचीन काल से ही घाट का विशेष महत्व है। "घाट का अर्थ जलाशय, नदी आदि के तट पर वह विशेष स्थान जहां लोग नहाते, धोते, जल भरते, नावों पर चढ़ते-उतरते हैं, कहीं-कहीं तालाब, नदी आदि के तट के आस-पास का वह स्थान जहां सीढ़ियाँ बनी होती है जिस पर से होकर लोग जल तक पहुँचते हैं उसे घाट कहा जाता है।"[1] काशी नगरी की एक पहचान वहाँ नदी तट पर बने अस्सी घाटों से भी है। काशी जाने वाले वाले श्रद्धालु गंगा किनारे बने इन घाटों के एक बार दर्शन अवश्य करता है। काशी के इन्हीं घाटों में मणिकर्णिका घाट का विशेष आध्यात्मिक महत्व है। वर्तमान समय में काशी में 88 घाट हैं- "वाराणसी शहर में 88 घाट हैं। अधिकांश घाट स्नान और पूजा समारोह घाट है, जबकि दो घाटों का उपयोग विशेष रूप से श्मशान स्थलों के रूप में किया जाता है। कई घाट किंवदंतियों या पौराणिक कथाओं से जुड़े होते हैं जबकि कई घाट निजी स्वामित्व में होते हैं।"[2]

लोक शब्द संस्कृत के लोक (दर्शने) धातु में घञ् प्रत्यय लगाने पर निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है देखना, जन समुदाय प्रारंभ से जिन रीति-रिवाजों, परंपराओं और आदर्शों को देखते आया है जिसका वह स्वयं भी पालन करता है, अपनाता है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करता है लोक की परिधि में आता है। लोक की परम्पराएं अटूट रूप से युगों-युगों से चली आ रही है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक के संबंध में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है- "लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं है बल्कि नगरों व ग्रामों में फैली हुई वह समस्त जनता है जिनके व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है, ये लोग नगर में परिष्कृत रुचि से सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा, अधिक सरल अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं।"[3] इस प्रकार लोक केवल ग्राम तक सीमित नहीं है बल्कि वे सभी लोक के अंतर्गत हैं जो अपनी परंपरा, रीति-रिवाज के अनुसार कृत्रिमता से परे सहज, सरल जीवन व्यतीत करते हैं। छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में भी रीति-रिवाज, परंपरा, मान्यताओं का विशेष स्थान है। यहाँ के अधिकांश लोगों का जीवन कृषि पर आश्रित है। धान यहाँ की मुख्य फसल है जिसके लिए ज्यादा पानी की आवश्यकता होती है। ग्रामीण जीवन में प्रत्येक ग्राम में विभिन्न प्रकार के तालाब होते हैं। इनका उपयोग भी अलग-अलग प्रकार से होता है। कुछ तालाब खेतों में फसल की सिंचाई के काम आता है तो कुछ तालाब केवल निस्तारी (स्नान) आदि कार्यों के लिए आरक्षित होता है। गाँव के किसी एक तालाब में शीतला देवी विराजमान रहती हैं इसलिए इसे शीतला तालाब भी कहा जाता है, यह धार्मिक महत्व का तालाब होता है। तालाब अलग-अलग आकार एवं महत्व के होते हैं एवं प्रत्येक तालाब का एक निश्चित नाम होता है। आकार में छोटे तालाबों को छत्तीसगढ़ी में 'डबरी' एवं बड़े आकार के तालाबों के लिए 'बांधा' आदि शब्द का प्रयोग करते हैं। तालाब में स्नान आदि के लिए घाट का निर्माण किया जाता है। कुछ घाट में पुरुष स्नान करते हैं उसे पुरुष घाट एवं कुछ घाट में महिलाएं स्नान करती है उसे महिला घाट कहा जाता है। लोक जीवन में बहुत से लोग आज भी तालाब में स्नान एवं कपड़े धोने का कार्य करते हैं। तालाब पर बने घाट सामाजिक मेल-मिलाप के लिए एक उत्तम स्थान है। तालाब पर बने घाटों पर प्रतिदिन लोगों का आपस में मेल-मिलाप होता है जहां वे अपने सुख-दुःख, विचारों, भावनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। तालाब घाट का लोक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। लोक जीवन के विभिन्न रीति-रिवाज, परंपरा, संस्कार तालाब घाट में ही सम्पन्न होते हैं।

जँवारा विसर्जन- यह पर्व देवी को समर्पित है| चैत्र नवरात्रि के समय जँवारा बोकर देवी की आराधना, भक्ति एवं सेवा की जाती है | चैत्र माह की प्रतिपदा को रीति-रिवाज के अनुसार बांस से बनी टोकरी में जँवारा बोया जाता है| "जँवारा शब्द शीतकाल में बोये जाने वाले एक अनाज जौं से बना है| जँवारा में गेहूँ, उड़द, चना आदि पाँच या सात प्रकार के बीज घर के भीतर भूमि पर अथवा टोकनियों में देवी की स्थापना के पश्चात् बोये जाते हैं|"[4] बीजों को नवरात्रि के एक दिन पूर्व ही भिगा देते हैं इसे 'बिरही भिगाना' कहते हैं| नौ दिन माता की सेवा करने के बाद अगले दिन शोभा यात्रा के साथ तालाब के निश्चित घाट में जँवारा का विसर्जन किया जाता है| ग्रामीण विसर्जन को देखने के लिए बड़ी संख्या में तालाब के किनारे एकत्रित होते हैं। विसर्जन के पश्चात तालाब घाट पर ही प्रसाद का वितरण किया जाता है।

भोजली विसर्जन- छत्तीसगढ़ के लोकपर्व में भोजली का विशिष्ट स्थान है| श्रावण पंचमी से लेकर पूर्णिमा (रक्षाबंधन) तक भोजली पर्व मनाने की परंपरा है| भोजली बोने के एक दिन पहले पाँच प्रकार के अनाज को भिगा दिया जाता है जिसमें ज्यादा मात्रा गेंहू का होता है भोजली को बांस की टोकरी में मिट्टी डालकर बोते हैं| जिसकी नौ दिनों तक विधि-विधान से पूजा की जाती है| अंत में रक्षाबंधन के दिन पारंपरिक रीति-रिवाज के साथ भोजली का विसर्जन तालाब पर बने घाट पर किया जाता है।

गौरा-गौरी विसर्जन- कार्तिक मास के अमावस्या तिथि को लक्ष्मी पूजा की रात्रि में गोरा-गौरी पर्व मनाया जाता है| इस पर्व का प्रारंभ गौरा चाँवरा में कुछ दिन पहले ही फूल कुचरने के साथ हो जाता है| आमवास्य के दिन दिन मे पवित्र मिट्टी लाकर भगवान शिव और पार्वती की मूर्ति बनाते हैं| जिसे चौकी में रखकर आकर्षक रंगीन कागज एवं धान की बालियों से सजाते हैं| चौकी में चारों कोनों में दीये भी जलाया जाता जाता है| इस अवसर पर गौरा-गौरी गीत गाने की भी परंपरा है| इस चौकी को सिर में धारणकर रात में गौर-गौरी की यात्रा निकाली जाती है| यह यात्रा सभी घरों के पास से गुजरती है जिसका सभी लोग अपने आँगन में चौक पूरकर स्वागत एवं पूजन करते हैं | अंत में गौरा-गौरी का तालाब घाट में विसर्जन होता है|

प्रतिमा विसर्जन- छतीसगढ़ के लोक जीवन में आश्विन माह में नवरात्रि का पर्व मनाया जाता है जिसमें देवी प्रतिमा की स्थापना करके नौ दिन तक विधि-विधान से पूजा, अर्चना की जाती है। इसी प्रकार यहाँ गणपति स्थापना करने की भी परंपरा है। अंत में दोनों प्रतिमाओं का विसर्जन ग्रामीणों की उपस्थिति में तालाब पर बने घाट में किया जाता है।

मृत्यु संस्कार- संसार में जो भी जीव जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित है। लोक जीवन में मृत्यु उपरांत आत्मा की शांति के लिए विभिन्न संस्कार की परंपरा है, जिसके लिए तालाब घाट का उपयोग किया जाता है। मृत व्यक्ति के अग्नि संस्कार उपरांत तालाब घाट पर आकर महिला एवं पुरुष अलग-अलग घाट पर स्नान करने के उपरांत मृत व्यक्ति की आत्मा के लिए जल अर्पित करते हैं। मृत्यु तिथि से लेकर अंतिम कार्यक्रम तक प्रतिदिन तालाब या नदी घाट पर जाकर जल अर्पित करते हैं। इसके साथ ही ग्रामीण अंचल में सम्पन्न वर्ग के लोग पिंडदान भी तालाब पर बने घाट पर ही करते हैं। मृत्यु संस्कार के लिए गाँव का एक घाट निर्धारित होता है जिसमें पीपल का पेड़ हो। इसी पीपल वृक्ष के नीचे मृत व्यक्ति की अस्थियों को रखकर जल अर्पित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रीष्म काल में नदियों का जल सूख जाता है साथ ही सभी ग्रामों से नदियों का प्रवाह हो यह भी संभव नहीं है। इसलिए लोक जीवन में तालाब का विशेष महत्व है जहाँ वर्षा का जल संगृहीत होता है, जिसका ग्रामीण वर्षभर विभिन्न कार्यों के लिए उपयोग करते हैं।

देवता कार्य- छत्तीसगढ़ की लोक परंपरा में कुछ जातियों द्वारा अपने इष्ट देवता को बलि देने की परंपरा है। यह बलि कुछ विशेष प्रयोजन से दी जाती है, जिसमें बकरा, सुअर या मुर्गा होता है। इसमें कुछ परंपराओं का निर्वहन तालाब पर बने घाट में किया जाता है। तालाब पर होने वाले देवता कार्य में महिलाएं सम्मिलित नहीं होती है। पुरुष वर्ग अपने परिवार के लोगों के साथ बलि पूजन उपरांत भोजन बनाकर तालाब के घाट में ही भोजन करते हैं।

निष्कर्ष- लोकजीवन में तालाब या नदी पर बने घाट सामाजिक समरसता का प्रतीक है। जहाँ पर बिना किसी भेदभाव के सभी लोग एकत्रित होते हैं विभिन्न क्रियाकलाप सम्पन्न करते हैं, अपने सुख-दुःख को आपस में बांटते हैं। तालाब घाट के बिना गाँव की कल्पना भी नहीं कर सकते। आज शहरों में वर्षा जल संचय के लिए विभिन्न उपाय किये जा रहे हैं। नये बनने वाले भवनों में 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग' अनिवार्य किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर मनुष्य के जीवन में जल के महत्व को देखते हुए लोक जीवन में बहुत पहले से तालाब आदि बनाकर वर्षा के जल को संचय करने की परंपरा है। लोक जीवन में तालाब निर्माण सबसे पुण्य का कार्य माना जाता है। साहित्यकार परदेशीराम वर्मा के अनुसार- "छत्तीसगढ़ के गांवों में तालाबों का बहुत महत्व है। तालाब पुण्य अर्जित करने के लिए खुदवाए जाते थे। इसी तरह पुत्र प्राप्तिके लिए, मोक्ष के लिए तालाब खुदवाने की परंपरा छत्तीसगढ़ में रही है।"[5] साथ ही तालाब के किनारे बरगद, पीपल के वृक्ष लगाने की परंपरा है। तालाब और उसके किनारे वृक्ष लगाना दोनों पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण है। तालाब जब कभी सूख जाता है तो उसके अंदर की मिट्टी का भी उपयोग किया जाता

है। मिट्टी को निकालकर खेत में डाल देते हैं जो खाद का काम करता है साथ ही इससे तालाब की गहराई पुनः प्राप्त हो जाती है, जिससे तालाब में अधिक जल का संचय होता है।

संदर्भ सूची-

1. https://www.rekhtadictionary.com/meaning-of-ghaat
2. https://varanasi.nic.in/hi/tourist-place
3. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, जनपदपत्रिका, खंड-1,पृ.-65
4. नायडू, हनुमंत, छत्तीसगढ़ी लोकगीतों का लोकतात्विक तथा मनोवैज्ञानिक अनुशीलन, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर, (1987) पृ.-73
5. वर्मा, परदेशीराम, छत्तीसगढ़ की लोककथाएं, प्रभात पेपरबैकस, नईदिल्ली, (2022) पृ.-14